kNOw Fear: महिलाओं और हाशिए पर मौजूद समुदायों के लिए ग्रामीण सार्वजनिक स्थानों की पुनः प्राप्ति पर एक संगोष्ठी

ज्ञान को आगे बढ़ाना, एकजुटता बनाना, और ग्रामीण क्षेत्रों को अधिक सुरक्षित व समावेशी बनाने की वकालत को गति देना

यह क्यों? और क्यों अब?

प्रसंग और पृष्ठभूमि

जहाँ घरेलू हिंसा को अब कुछ हद तक सार्वजनिक और नीति स्तर पर पहचान मिल रही है, वहीं ग्रामीण भारत में महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ सार्वजनिक स्थानों पर होने वाली हिंसा अभी भी बड़े पैमाने पर अनदेखी रह गई है—जबकि इसका सीधा असर उनकी शिक्षा, आजीविका, नागरिकता अधिकारों और समग्र भलाई पर पड़ता है।

कानूनी या समाजशास्त्रीय नजरिये से, सार्वजनिक स्थान सभी के उपयोग और आनंद के लिए खुले होने चाहिए। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में—सड़कें, खेत, जंगल, स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र, पंचायत कार्यालय, कार्यस्थल और यहाँ तक कि डिजिटल मंच—महिलाओं, लड़कियों और अन्य वंचित समुदायों के लिए असुरक्षित या बहिष्कारी बने हुए हैं। इसके पीछे जाति, जनजाति, धर्म, लैंगिकता और दिव्यांगता जैसे कई आड़तनों (intersections) का योगदान है।

इन असमानताओं को चुनौती देने के लिए एक ऐसा दृष्टिकोण चाहिए जो मुक्ति और बदलाव पर आधारित हो—जो सामाजिक मान्यताओं, शक्ति-संरचनाओं और संस्थागत उपेक्षा को जड़ से चुनौती दे।

2017 से, SWATI 'kNOw Fear' मॉडल के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं और लड़कियों की सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षा को स्थानीय शासन के केंद्र में लाने का प्रयास कर रहा है। यह पहल सुरक्षा को एक नागरिक अधिकार के रूप में पुनर्परिभाषित करती है और ग्राम पंचायतों को एक सक्रिय भूमिका में रखती है।

'kNOw Fear' पहल एक अहम खाली जगह को भरने की कोशिश है—ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक स्थानों पर आधारित लैंगिक हिंसा को बातचीत में केंद्र में लाने, सार्वजनिक स्थान

की परिभाषा को व्यापक बनाने और जमीनी स्तर की रणनीतियों और ज्ञान को सतह पर लाने के लिए।

ग्रामीण क्षेत्रों में पुलिस व्यवस्था कमजोर, बुनियादी ढांचा अपर्याप्त, जातिगत-पितृसत्तात्मक व्यवस्था मजबूत, और जवाबदेही की प्रणालियाँ कमजोर हैं। इन व्यवस्थित बाधाओं को तोड़ने के लिए प्रमाण आधारित शोध, एकजुटता और हस्तक्षेप की सख्त जरूरत है।

हमारा उद्देश्य: साझी समझ, संवाद और योगदान का आह्वान

SWATI, ISST और TISS मिलकर ऐसे कार्यकर्ताओं, शोधकर्ताओं और पेशेवरों को आमंत्रित कर रहे हैं, जो ग्रामीण भारत में लैंगिक समानता, सुरक्षा और सार्वजनिक जीवन के संगम पर काम कर रहे हैं।

यह संगोष्ठी एक ऐसा मंच बनेगा जहाँ हम:

1. ग्रामीण सार्वजनिक स्थानों में हिंसा, भेदभाव और बहिष्कार पर आधारित शोध और अनुभव साझा करें
2. सर्वाइवर-आधारित, संस्थागत और सामुदायिक उत्तरों पर चर्चा करें जो व्यवस्था में बदलाव का रास्ता दिखाते हैं
3. सार्वजनिक स्थानों, स्कूलों और कार्यस्थलों के लिए अभिनव 'जेंडर-सुरक्षा ऑडिट' तरीकों की पड़ताल करें, जो नीति और बुनियादी ढांचे को प्रभावित कर सकें
4. एक प्रमाण आधारित कार्रवाई एजेंडा बनाएँ जो बराबरी, समावेशिता और जवाबदेही पर आधारित हो

हम क्या चाहते हैं

हमें पता है कि कुछ हस्तक्षेपों को दस्तावेज़ किया गया है, लेकिन कई ऐसे भी हैं जो अभी विकसित हो रहे हैं या जिनका कार्य अनौपचारिक है और साझा नहीं हुआ है।

इसलिए हम निम्नलिखित क्षेत्रों में आपके अनुभव, रणनीतियाँ और ज्ञान आमंत्रित करते हैं:

- ग्रामीण सार्वजनिक स्थानों में हिंसा की प्रभावशीलता और पैमाना

- स्कूलों में लड़कियों और हाशिए के समुदायों की सुरक्षा (दलित, आदिवासी, मुस्लिम, ट्रांस महिलाएं और दिव्यांग व्यक्ति)
- ग्रामीण अनौपचारिक क्षेत्रों में कार्यस्थल की सुरक्षा (कृषि, निर्माण, घरेलू कार्य)
- देखभाल कार्य या फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं से जुड़ी बहिष्करण की कहानियाँ
- डिजिटल हिंसा और उसका ऑफलाइन प्रभाव
- स्थानीय संस्थानों की भूमिका (ग्राम पंचायत, स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र) – सुरक्षा सक्षम करने या अवरोध बनने में
- संगठनों, समूहों और एकजुटता आधारित प्रतिक्रियाओं की भूमिका जिन्होंने सामाजिक बदलाव की दिशा में काम किया

हम कौन हैं

SWATI – Society for Women's Action and Training Initiatives
गुजरात-आधारित यह नारीवादी संगठन पिछले दो दशकों से घरेलू और सार्वजनिक हिंसा को समझने और जवाबदेही प्रणाली मजबूत करने के लिए जमीनी काम कर रहा है।
2017 से 'kNOw Fear' मॉडल के तहत SWATI ग्राम पंचायतों, किशोरियों, फ्रंटलाइन वर्करों और ग्रामीण समुदायों के साथ मिलकर सुरक्षित सार्वजनिक स्थानों के अधिकार को स्थानीय शासन में शामिल कर रहा है।

ISST – Institute of Social Studies Trust
1980 में स्थापित ISST, लैंगिक संवेदनशील शोध और सामुदायिक विकास कार्यक्रमों का अग्रणी संस्थान है।
इसके चार मुख्य फोकस क्षेत्र हैं:

- अनौपचारिक और असुरक्षित काम तथा देखभाल कार्य
- काम में आधारित लैंगिक हिंसा
- कार्य की डिजिटलता और महिलाओं की भागीदारी

TISS – टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, महिला केंद्रित सामाजिक कार्य केंद्र
यह केंद्र, जाति, वर्ग, जनजाति, धर्म, लैंगिकता, विकलांगता जैसे संदर्भों में महिलाओं की यथार्थ स्थितियों को सामाजिक कार्य की समझ और अभ्यास में केंद्र में लाने का कार्य करता है।

हमारी समझ में सार्वजनिक स्थान क्या है?

सार्वजनिक स्थान केवल भौतिक नहीं होते—वे सामाजिक, राजनीतिक और डिजिटल भी होते हैं।

हमारे परिप्रेक्ष्य में सार्वजनिक स्थान में शामिल हैं:

- **भौतिक स्थान**: सड़कें, खेत, बाज़ार, सार्वजनिक परिवहन
- **कार्यस्थल**: निर्माण स्थल, खेत, आंगनवाड़ी, ईंट भट्ठे, मनरेगा, घरेलू काम
- **संस्थान**: स्कूल, हॉस्टल, हेल्थ सेंटर, पंचायत कार्यालय, राशन दुकानें, बैंक
- **डिजिटल स्पेस**: सोशल मीडिया, ऐप्स, ऑनलाइन मंच

ग्रामीण संदर्भ में, **जाति, लैंगिकता, दिव्यांगता, धर्म और आदिवासी पहचान** के साथ जुड़ी असमानताएँ और बुनियादी ढांचे की कमी, इन्हें और जटिल बना देती हैं।

यह संगोष्ठी शोधकर्ताओं, कार्यकर्ताओं और शिक्षाविदों को एक साथ लाकर इस महत्वपूर्ण लेकिन कम पहचानी गई समस्या पर साझा एजेंडा बनाने की दिशा में काम करेगी। आइए हम सार्वजनिक स्थान को सिर्फ एक अधिकार नहीं, बल्कि एक परिवर्तनकारी संभावना के रूप में पुनः प्राप्त करें—ग्रामीण महिलाओं, लड़कियों और विविध पहचानों वाले लोगों के लिए।

स्थान: महिला केंद्रित सामाजिक कार्य केंद्र, स्कूल ऑफ सोशल वर्क, टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान (TISS), मुंबई
तिथियाँ: **2 – 3 जुलाई, 2025**

अगर आप चाहें, तो मैं एक आकर्षक पोस्टर या आमंत्रण पत्र का ड्राफ्ट भी बना सकता हूँ।